

जनजातिय महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन एवं नशा प्रवृत्ति का अध्ययन

डॉ शहनाज बेगम*

संक्षेपिका

बनवासी जीवन में श्री राम ने समाज के उच्च और निम्न वर्गों से केवल घनिष्ठ संबंध ही स्थापित नहीं किया, वरन् देश में व्याप्त सामाजिक रूढ़ियों और मान्यताओं के विपरीत उत्साह और साहस युक्त नये परिवर्तन लाने की भी सफल चेष्टा की। अपने प्रति सच्चा अनुराग रखने वाली बूढ़ी भीलनी शबरी के आश्रम में जाकर उसके जूठे बेर खाना तथा अपनी विचारधारा से अवगत कराना राम का उपेक्षित वर्ग के प्रति ठोस स्नेह था। और पुरानी रूढ़ियों पर करारी चोट थी।

अध्ययन की आवश्यकता एवं उद्देश्य

1. जनजाति महिलाओं में मद्यपान जागरूकता के कारणों का पता करना।
2. मद्यपान सेवन से उनके परिवार के सदस्यों की प्रतिक्रिया।
3. विकास कार्यक्रमों के प्रति ज्ञान तथा व्यवहारों का विश्लेषण करना।
4. जनजाति महिलाओं के विकास के सकारात्मक प्रभावों का मूल्यांकन करना।
5. इस व्यसन से होने वाले दुष्परिणामों का अध्ययन करना।

नशा प्रवृत्ति-(जनजातिय महिलाओं में)

वर्तमान परिपेक्ष में नशा कई कारणों से की

जाती है। जैसे फैशन बतौर नशे की आदत के कारण बीमारी के कारण, निर्धनता, बेरोजगारी आदि कारणों से मद्यपान की जाती है। भारत वर्ष के निर्धन लोगों में मद्यपान उनकी नशा को और भी गिराए रखता है। मद्यपान सदैव व्यक्तिगत विघटन नहीं करता, परन्तु फिर भी मद्यपान व्यक्तिगत का एक बड़ा कारण माना जाता है। व्यक्ति मद्यपान से अनियंत्रित हो जाता है इस कारण मद्यपान सामाजिक विघटन भी उत्पन्न करता है। मादक पेयो शराब, ताड़ी, मदिरा आदि का सेवन ही मद्यपान कहलाता है। जनजातीय समाज में भी मद्यपान कोई बुराई नहीं बल्कि संस्कृति माना जाता है। जनजातीय जीवन मुख्यतः मद्यपान के माध्यम से साधक रहा है।

*अतिथि सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र), शासकीय घनश्याम सिंह गुप्त पी.जी. महाविद्यालय बालोद (छ.ग.)

जो उसके सामान्य जनजीवन का युगो-युगो से चले आ रहे जीवन पद्धति का मूल रूप है। अपनी इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने को भी तत्पर रहता है। जहां महुआ के वृक्ष नहीं हैं ऐसे स्थानों पर आदिवासी सल्फी, ताड़ी आदि वृक्षों से मद्य प्राप्त करता है।

जनजातीय समाज में निम्न मद्यपान का प्रचलन है सल्फी, ताड़ी, लौदा, महुआ, देशी शराब तंबाखू, भांग, गांजा, गुड़ाखू, आदि जिसमें से भांग देशी शराब, गांजा का सेवन मात्र पुरुष वर्ग करते हैं। अधिकतर महिलाएं मद्य का सेवन मात्र तीज त्योहारों या जिस दिन उन्हें मजदूरी प्राप्त होती है उस दिन करती हैं, कुछ महिलाएं ऐसी हैं जो इसकी आदि हो चुकी हैं।

अपने पति या परिवार के साथ मिलकर मद्य का सेवन करना समाज की परंपरा में शामिल है, वे महिलाएं लौदा व महुए की शराब का निर्माण अपने घर पर ही करती हैं।

लांदाए चावल को भिगाकर पीसा जाता है, और भाप में पकाकर पानी में घोल कर बना कर दो से तीन दिन तक सड़ने के लिए रखते हैं। इसके बाद इसमें नशा उत्पन्न होता है। इसी प्रकार महुए को भी भिगाकर हंडी में पानी रखकर उसके ऊपर महुए की हंडी को रखकर पकाया जाता है। भाप द्वारा पक कर दूसरे बर्तन में शराब जमा की जाती है। इस प्रकार से महुए की शराब का निर्माण किया जाता है।

शराब के बिना उनका कोई कार्य या संस्कार नहीं होता है उदाहरण के लिए विवाह, जन्म आदि संस्कारों में यहां तक कि मृत्यु संस्कारों

में भी जनजातीय महिला एवं पुरुष मिलकर मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं, जनजातीय महिलाएं स्वयं ही महुआ तथा अन्य पदार्थों से मद्य का निर्माण कर सेवन करती हैं। किन्तु नगरीय क्षेत्रों के आसपास निवास करने वाली जनजातियां बाजार से शराब एवं अन्य मद्यपान खरीदकर उपयोग में लाती हैं।

आधुनिक वातावरण के प्रभाव स्वरूप देशी शराब के सेवन का प्रचलन भी बढ़ा है। किन्तु इसका प्रतिशत महिलाओं में काफी कम है। आर्थिक कारणों से महिलाएं इन मद्यपान का सेवन नहीं के बराबर करती हैं।

जनजाती महिलाओं में सामाजिक परिवर्तन

पूर्व में जनजातिय महिलाओं की शिक्षा को महत्व नहीं दिया जाता था, उनका मत था कि स्त्रियां सिर्फ घर का कार्य कर सकती हैं परन्तु अब इस विचारधारा में उल्लेखनीय परिवर्तन हो रहा है। बालिकाओं की शिक्षा को लेकर अब लोग जागरूक हो गए हैं। बालिकाओं को भी पढ़ने के लिए भेजा जा रहा है जिससे स्त्रियों के निम्न स्तर में परिवर्तन हुआ है। लोगों में शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ रही है और शिक्षा पर होने वाले खर्च को फिजूल खर्च नहीं समझते हैं। इससे समाज में महिलाओं की स्थिति में काफी सुदृढ़ता आई है। आदिकाल से ही इनमें बालविवाह का प्रचलन रहा है। वर्तमान में इस जाति में शिक्षा के प्रसार-प्रचार से तथा आधुनिकीकरण के प्रभाव से परिवर्तन आ रहे हैं। सभ्य समाज के सम्पर्क में आने से इनमें सभ्यता पनप रही

है। पहले विधवा स्त्री दूसरा विवाह नहीं कर सकती थी मगर आज विधवा विवाह हो रहे हैं। महिलाएँ शिक्षित होने के बाद मतदान करना अपना अधिकार समझते हैं और अब इनमें राजनैतिक पार्टियों के क्रियाकलापों के फलस्वरूप राजनैतिक जागरूकता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। पूर्व में पौधों के पत्ते, वृक्षों के छालों को अपने शरीर पर लपेटते थे आदिमानव की तरह जीवन व्यतीत करते थे वर्तमान में ये हर तरह के कपड़े पहनना प्रारंभ कर दिया है। पैदल यात्रा करने वाले वर्तमान में यातायात के साधनों का उपयोग करने लगे हैं। अंधविश्वास को छोड़कर स्वास्थ्य खराब होने पर फूक-झाड़ न करके डाक्टरी इलाज का महत्व समझने लगे हैं।

प्रसव पहले घर में ही होती थी जिससे स्त्रियों की दशा अत्यंत दयनीय होती उनकी मृत्युदर भी उच्च होती थी, परन्तु आज ये चिकित्सालय जाकर इलाज करवाने लगे हैं। शिक्षित होने से परिवार-नियोजन का महत्व भी समझने लगे हैं। धार्मिक कट्टरता में परिवर्तन आया है पूर्व में बलिप्रथा का प्रचलन एवं पुरुष वर्ग बाल नहीं कटवाना आदि अपने धर्म व प्रथाओं को छोड़कर धीरे-धीरे छत्तीसगढ़ की संस्कृति को अपनाने लगे हैं। अपनी मूल भाषा को ना बोलकर आज का युवा पीढ़ी हिन्दी/छत्तीसगढ़ी का प्रयोग करने लगे हैं।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि शिक्षा का प्रसार, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति आदि के कारण जनजातीय महिलाओं में अनेक सामाजिक सांस्कृतिक, धार्मिक,

राजनैतिक, शैक्षिक, वैचारिक परिवर्तन हुए हैं जो हमारे सामने उभर कर आए हैं। जनजातीय महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए उनको शासन के द्वारा समाज की मुख्यधारा से जोड़ना होगा तभी महिला सशक्तिकरण संभव है।

सुझाव

एक स्त्री ही स्वयं शिक्षित होकर पूरे परिवार को शिक्षित बना सकती है। अतः जनजाति स्त्रियों को अपनी शिक्षा के प्रति जागरूक रहना चाहिए तथा समाज में फैली अनेक बुराईयाँ, अज्ञानता रूढ़िवादिता, संकीर्णता, को दूर कर शिक्षित बनकर स्वयं आत्मनिर्भर बनना चाहिए।

- स्त्रियों को स्वयं ये दिया जाना चाहिए कि वे अपना निर्णय खुद ले सकें। उसे पारिवारिक दबाव में नहीं रखना चाहिए।
- परिवार नियोजन को प्राथमिकता देनी चाहिए जिससे स्त्रियों की स्थिति व स्वास्थ्य में सुधार हो सके।
- आर्थिक स्थिति की मजबूती के लिए सहकारी समितियों द्वारा परम्परागत व्यवसाय को लाभप्रद बनाया जाना चाहिए।
- शासन के द्वारा शिक्षा व व्यवसाय के लिए वित्तीय सहयोग प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे इनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हो सके।
- जनजातीय स्त्रियों को जागरूक होकर आधुनिकता से जुड़ना चाहिए।

- जाति पंचायतों द्वारा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए पहल की जानी चाहिए।
- बच्चों को बचपन से ही पढ़ाई के प्रति रुचि पैदा करें और उन्हें सही उम्र में पाठशाला भेजे ताकि नई पीढ़ी समझदार व शिक्षित हो सके।
- जादू-टोना पर विश्वास करना इस जाति के लोगो को बंद करना चाहिए ताकि उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हो सके।

निष्कर्ष

जनजातीय समाज में मद्यपान सेवन परंपरा व संस्कृति में ही है वे स्वयं ही महुआ व अन्य पदार्थों जैसे लांदा महुआ के शराब पर ही बनाते हैं तथा बेचते भी हैं यह उनकी आमदनी का एक जरिया है परन्तु वर्तमान समय में नशे की समस्या बढ़ती जा रही है। इनके अलावा जनजातियों में भी गुटखा, तम्बाखू, शराब आदि का सेवन बढ़ता जा रहा है। नशीले पदार्थों का सेवन के कई कारण परिवार सामाजिक व्यवस्था, व्यवसायिकता दोस्ती, स्वयं की जागरूकता आदि। इसका अलावा जनजातीय संस्कृति में मद्यपान की प्रकृति इस व्यसन को और अधिक बढ़ावा दे रही है। तथा इन महिलाओं की कम आमदनी

में भी इन व्यसनो के प्रयोग करने के कारण इनकी दरिद्रता व निर्धनता बढ़ती जा रही है।

संदर्भ-सूची

1. दुबे लीला, 19992 - महिलाएं और विकास म.प्र.हि.ग्र.अकादमी का प्रकाशन, भारत की सांस्कृतिक विरासत, भोपाल।
2. सच्चिदानंद सर्वे आफ सोशियोलॉजी एण्ड सोशल एन्थ्रोपोलॉजी आई.सी.एस.आर. 1984।
3. चैधरी डी.एस.-1981 इमर्जिंग लीडरशिप इन ट्राइबल इंडिया, मानक पब्लिकेशन्स।
4. दुबे श्यामाचरण-1992 विकास का समाज शास्त्र वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. तिवारी शिवकुमार: म.प्र.की जनजातियां, म.प्र.हिन्दी एवं ग्रंथ अकादमी, भोपाल 1975।
6. वार्षिक प्रतिवेदन: आदिमजाति एवं अनु.जाति क्षेत्रीय विकास प्राधिकरण बिलासपुर।
7. Chavdhuri, B.D.: "Tribal Development in India" Problems and Projects, D.K. Pub. New Delhi. 1982.
8. Ali, S.F.: Tribal Demography in m.p. Jai bharat pub. Bhopal 1973.
9. Griffiths, W.G.: the koltribe central India, Calcutta, 1946.